ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

प्रभा खेतान कृत उपन्यास 'तालाबंदी' में अभिव्यक्त राजस्थानी लोकजीवन

KEY WORDS: मारवाड़ी, व्यावसायिक, घराने, राजस्थानी, बाणिया, साँवरा, पारंपरिक

नारायण सिंह शोधार्थी, हिंदी विभाग, कुवेंपु विश्वविद्यालय, शिमोगा, कर्नाटक

ABSTRACT

'तालाबंदी' उपन्यास राजस्थानी के मारवाड़ी व्यापारियों के जीवन संघर्ष का दर्शाता है। उनका अपने व्यापार में व्यावसायिक हितों की रक्षा करना तथा अपने परिवार की जड़ों को मजबूती से अपने संस्कारों की मिट्टी में बनाए रखने के सामंजस्य को यह उपन्यास चित्रित करता है। कथा नायक राजस्थान से बंगाल में आकर अपने व्यापार की शुरूआत करता है, किंतु व्यापार की सफलता के लिए उसको किस प्रकार अपने परिवार के हितों की अनदेखी करनी पड़ जाती है। व्यापार में किस तरह से लोग हर पल उसको नीचे गिराने के लिए तत्पर रहते हैं। इन सभी प्रसंगों के माध्यम से यह कथा बुनी गयी है।

प्रस्तावना

'तालाबंदी' श्रीमती प्रभा खेतान रचित एवं वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से 1991 में प्रकाशित उपन्यास है। यह उपन्यास उन्होंने मारवाड़ी समाज की व्यावसायिक मनोवृत्ति को आधार बना कर लिखा है। अपने मातृस्थान को त्याग कर अपने व्यवसायिक हितों के लिए मारवाड़ी लोगों का नए जगह पर प्रस्थान करना एक लंबी परंपरा रही है। किंतु अपने व्यवसायिक हितों के पीछे इतनी कट्टरता होने के कारण अक्सर अपने सामाजिक एवं पारिवारीक संबंधों के प्रति उपेक्षा का भाव पनपने लगता है। प्रभा खेतान ने मारवाड़ी व्यापारी परिवार के जीवन में मची उथल पुथल के साथ ही समय के साथ हो रहे परिवर्तन के प्रति उनकी मानसिकता में आ रहे बदलाव को भी रेखांकित करने का प्रयास किया है। 127 पृष्ठों वाला यह उपन्यास अपनी संतुलित गति वाला उपन्यास है, जो अपने सूत्रों में पाठक को जकड़ कर रखता है। पाठक कहानी के अंत तक श्याम बाबू के जीवन झरोखों से खुद को जुड़ा हुआ अनुभव करता है।

कथासूत्र एवं पात्र

राजस्थान से अपने व्यावसायिक हितों के लिए बंगला में प्रव्रजित मारवाड़ी परिवार के इर्द–गिर्द इस उपन्यास की कथा को रचा गया है। उपन्यास में पात्रों की कर्मभूमि बंगाल को बनाया गया है, बंगाल में प्रभावी मार्क्स के दर्शन को लेखिका ने परिचयात्मक रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। चूंकि कथा की आधारभूमि बंगाल है इसलिए अधिकांश बाहरी पात्रों के नाम बंगाली ही हैं। उपन्यास के कथासूत्र मारवाड़ी व्यापारी एंव कथानायक श्यामबाबू को केन्द्र में रख कर पिरोये गए हैं। उनके इर्द–गिर्द कथा आगे से आगे सूत्र जोड़ती हुई अपने गंतव्य तक की यात्रा पूर्ण करती है। इस उपन्यास की कथा में मुख्य रूप से कथा नायक की प्रगतिशीलता वाली सोच को अभिव्यक्ति किया गया है। अपनी फैक्टरी के मजदूरों के हितों की अनदेखी ना करने की वृत्ति को श्यामबाबू में दिखाया गया है। यह उस बदलाव को रेखांकित करने का प्रयास है जो मारवाड़ी व्यापारिक घरानों में समय के साथ विकसित हो रही है। अपने व्यापार एवं परिवार के बीच सामंजस्य के लिए संघर्ष करते नायक, जो अपनी फैक्टरी के मजदूरों ट्रेड यूनियन के नेताओं और पारिवारीक व व्यापारिक स्वार्थियों के साथ जूझ रहा है, को चित्रित करती है। उपन्यास में कथानायक मारवाड़ी व्यापारी है, इसलिए उनके परिवार के सदस्यों के चित्रण में सेठानी जी, जीजी, काकी–काकू आदि संबोधन मिलते हैं। श्यामबाबू कथा के मुख्य पात्र हैं, उनके परिवार में पत्नी सुमित्रा, पप्पू, विक्रम, पिन्नू, अजीत व बूढ़ी माँ व जीजी अन्य पात्र हैं। वहीं उनके व्यापारिक क्षेत्र में शेखर बाबू, अमल, विशेसर सिंह, भूतोड़िया, हरिनारायण चट्टोपाध्याय, परिमल आदि। कथा के पात्रों का संयोजन कथा के परिवेश के अनुकूल ही किया गया है।

सामाजिक स्वरूप

राजस्थान का मारवाड़ी समाज अपने कठोर पारंपरिक संस्कारों व व्यावसायिक हितों के लिए एक प्रकार की कठोर प्रवृत्ति के लिए जाना जाता है। समाज में अपने पारीवारिक मारवाड़ी घरानों में पारिवारीक ढांचा बहुत अधिक सघन होता है। मारवाड़ी समाज के सामाजिक चरित्र का चित्रण करने में प्रभा खेतान का यह उपन्यास एक सफल प्रयास है। सामाजिक बेड़ियों का समाज पर प्रभाव किस प्रकार जीवन को प्रभावित करता है, किस प्रकार नयी पौध समाज की पुरातन पंथी वैचारिकता को स्वीकार करके सिर झुकाकर आगे बढ़ना चाहती है। यह इस उपन्यास ने निश्चित रूप से अभिव्यक्त कर दिया है। किंतु इस उपन्यास की एक और विषेशता यह भी है कि प्रभा खेतान ने केवल मारवाड़ी समाज की पुरातन पंथी वैचारिकता को ही इंगित नहीं किया है अपितु उसके निवारण के लिए भी मार्ग दिखाने का कार्य किया है। कथानायक इन सामाजिक कट्टरताओं का विरोध करते हुए अपनी फेक्टरी के मजदूरों का भी नुकसान नहीं होने देता है ना ही अपनी फेक्टरी को बंद होने देता है। उपन्यासकार समाज के प्रत्येक पात्र को समुचित स्थान कहानी में देने का प्रयास किया है। उपन्यासकार ने मारवाड़ी व्यापारियों की पैसे के प्रति संकीर्ण मनोवृत्ति को दर्शाती पंक्तियां,'' अरे कठ स देवगा पीसा? ब तो बड़ा सेठ जी था, रूपिया राखण जानता। य आजकल का छोरा, के करसी, काई समझ में नहीं आव। काल लाइसेंस बेचकर रूपिया दस लाख तिजरी म धरया था, अभी सुब स तो छह लाख ब गया–ब गया। चोको खर्चो ही सेठानी जी लाख रूपिया मँगवा लिया।''[1] धन के प्रति मारवाड़ी व्यापारियों में एक प्रकार की कट्टर सोच दिखायी गयी है। लेखिका लिखती हैं,'' मारवाड़ियों के घरों में भाइयों के झगड़े में व्यापार का टूटना वे काफी देख चुके थे।''[2] कथा नायक श्यामबाबू अपने मांजे विक्रम को कहते हुए चित्रित हुए कि,'' यार, तू यह दलाली की बात मत किया कर। यह अपने मारवाड़ियों की आधी जाति साली दलाल हो गयी है। बात बिक्री करते हैं, चीज नहीं।''[3]

लोकजीवन की मान्यताएं

लेखिका ने उपन्यास में मारवाड़ी समाज के माध्यम से राजस्थान के लोकजीवन के कुछ पहलू प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अपने बेटे श्यामबाबू को समझाते हुए उनकी बूढ़ी माँ का कथन,'' रे बेटा! अईया रोटी नईं फेंकणी चइये।''[4] वहीं श्यामबाबू अपनी माता जी को कहते हैं,'' माँ तू खा–पी, दान–पुण्य कर, चिंता ही मत कर। तेरो साँवरो तन तकलीफ कोनी देव।''[5] लोक कहावत का प्रयोग करते हुए अजित कहता है,'' बापू, मारवाड़ियों को देखो! जिधर हवा, उधर पीठ।''[6] राजस्थानी लोकजीवन में देवी–देवताओं की मान्यताएं सबसे प्रमुख है। ईश्वर के प्रति विश्वास हमेशा से जीवन संघर्ष की प्रेरणा का श्रोत रहा है। उपन्यास की कुछ पंक्तियां,'' एलगिन रोड़ के मोड़ पर हनुमान जी के मंदिर के सामने उन्होंने गाड़ी रोकने को कहा। उतरकर बाबा को प्रणाम किया। ग्यारह रूपये चढ़ाये, चरणामृत लेकर मन थोड़ा शांत हुआ। संकटमोचन का जाप करने लगे साथ ही यह भी सोचने लगे कि आज यदि मेरा काम नहीं हुआ तो मैं हाँ, मैं कभी तेरा नाम नहीं लूँगा।'' वहीं अपनी व्यावसायिक समस्याओं से त्रस्त हो चुके श्यामबाबू को परेशान देखकर उनकी माँ कहती हैं,'' भाया, सब ठीक हो जासी। सती दादी, बाला जी म्हाराज, आज जान की रक्षा कर दिया। भाया, आपा कमती खा लेवंगा, पर यो के काम करनो होयो?''[8]

भाषा व शब्दावली

उपन्यासकार का स्वयं का संबंध राजस्थान के मारवाड़ी परिवार से रहा है। इसलिए राजस्थानी के इस स्वरूप से उनका परिचय है। इसलिए उपन्यास में राजस्थानी भाषा में मारवाड़ी बोली जो कि पश्चिमी राजस्थान में विशेषकर प्रयुक्त होती है, उसका प्रयोग पात्रों के मध्य चित्रित किया गया है। श्यामबाबू और मुनीम जी के बीच का एक संवाद,'' अरे ना भाया, इसी बात कोनी। तू थोड़ी देर बैठ तो सई। अबी जरा बो मद्रास वालों बेपारी स तो सलट लूँ।''[9] जब श्यामबाबू मुनीम जी से पैसे कमाने का तरीका पूछते हैं तब उनके मध्य हुआ ठेठ मारवाड़ी संवाद,'' अरे कमाई तो स चीज म ह भाया पर कमाणियो चईये। फेर रूपया राखणों और मुश्किल काम है। बाणिया क आव धन जद बच तो चवन्नी ओर जाव जणा घर स रूपिया को सवा रूपिया निकल।''[10] कहीं कहीं लेखिका ने आमजन के वार्तालाप में प्रयुक्त आधे शब्दों वाली शब्दावली का प्रयोग भी किया है। श्यामबाबू की माँ का एक संवाद,'' साँवरा, तू एकदम बदल गयो। दुनिया म स चीज ओजू मिल जासी, बेटा, पर तेरी माँ कोनी मिल।''[11] इस संवाद में लेखिका ने राजस्थानी शब्दावली म तथा स का प्रयोग में तथा सब के संदर्भ में किया है। इस तरह की शब्दावली राजस्थान के लोकजीवन में प्रायः प्रचलित है। उपन्यास में राजस्थानी लोकजीवन में आम प्रचलित शब्दावली का प्रयोग देखने को मिलता है, जैसे ससुराल के लिए सासर, ओजू अर्थात् वापस, बड़ी बहन के लिए बाई, कहाँ के लिए कठ, क्या करेंगे के लिए के करसी, राखण अर्थात् रखना, में के लिए म, रखने के लिए धरया, नहीं के लिए कोणी, बो अर्थात् वह, कमाणियो अर्थात् कमाई करने वाला, चाय के लिए चा, जानना के लिए जाणे आदि।

भाषायी विशेषता में उपन्यास में कहीं–कहीं प्रचलित कहावतों का प्रयोग भी मिल जाता है। जैसे–''जिस हाँडी में भात देखेगा, वहीं हाथ मारेगा।''[12] एक स्थान पर अजित का संवाद है–''बापू, मारवाड़ियों को देखो!जिधर हवा, उधर पीठ।''[13] लेखिका ने भाषा में पात्रों के मध्य संवाद स्थापित करते समय प्रयास किया है कि उनके परिवेश के अनुसार भाषा और शब्दावली प्रयुक्त की जाए।

इस प्रकार समग्रता में देखा जाए तो 'तालाबंदी' राजस्थानी लोकजीवन के चित्रण का एक सफल प्रयास कहा जाएगा। लेखिका ने राजस्थानी लोकसंस्कृति के तत्वों को उनके मौलिक रूप में स्थान दिया है। चाहे वह सामाजिक व सांस्कृतिक तत्व हो या भाषायी तत्व हो, लेखिका का प्रयास उनकी मौलिकता को बनाए रखने का रहा है। जिसके कारण से पाठक उपन्यास के साथ राजस्थानी लोकजीवन के तत्वों के साथ अपने जुड़ाव को सरलता से अनुभव कर सकता है।

संदर्भ साहित्य

1– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 9
2– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 14
3– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 29
4– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 31
5– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 29
6– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 25
7– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 21
8– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 75
9– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 97
10– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 10
11– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 10
12– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 71
13– तालाबंदी, प्रभा खेतान,1991, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ सं 16